समय के गहरे अँधेरे से निकली एक चिड़िया

भारत भूषण

यह लेख जेरडॉन कोर्सर नाम की एक दुर्लभ चिड़िया के बारे में है। एक ऐसी चिड़िया जो गुमनामी के अँधेरे में कई दशक तक खोई रही थी। सन् 1986 में पक्षी निरीक्षक भारत भूषण ने जेरडॉन कोर्सर की मौजूदगी के सबूत फिर एक बार दुनिया के सामने पेश किए। यह पल प्राकृतिक इतिहास के लिए बेहद महत्वपूर्ण रहा होगा और भारत भूषणजी ने काफी रोचकता के साथ इस वाकये को इस लेख के ज़रिए प्रस्तुत किया है।

विलुप्त माने गए जीवों की खोज एक चुनौती होती है। 2011 में चर्चित एक रिपोर्ट के अनुसार पिछले 135 सालो में कुछ 144 ऐसी प्रजातियों की खोज पुनः की गई है। इनमें से ज़्यादातर खोज सन् 1980 के बाद हुई है। ज़ाहिर है कि बेहतर उपकरण और जानकारी के कारण शिनाख्त करना आसान हो रहा है। तो जेरडॉन कोर्सर पुनःखोज का आखिरी उदाहरण न था और न होगा।

लेकिन दुर्भाग्यवश कई सारी प्रजातियाँ तेज़ी-से घट रही हैं। पर्यावरण के नुकसान के कारण बहुत सारे पर्यावास तेज़ी-से नष्ट हो रहे हैं। जेरडॉन कोर्सर जैसी स्थानिक प्रजातियाँ इससे सर्वाधिक प्रभावित होती हैं। पिछले कुछ 15 सालों में जेरडॉन कोर्सर भी फिर से खो गई है। हिमालयन बटेर, गुलाबी सर वाली बत्तख जैसी कई प्रजातियों को भी आखिरी बार देखे हुए लगभग कुछ दशक बीत चुके हैं।

ऐसी परिस्थिति में भारत भूषण जैसे व्यक्ति और जेरडॉन कोर्सर जैसे उदाहरण एक आशा निर्माण करते हैं कि ऐसी प्रजातियाँ अभी भी दूर किसी जंगल के कोने में अपनी मौजूदगी छुपाकर जी रही हैं। यह लेख उन तमाम लोगों की हौंसला अफज़ाई करता है जो एक आशा के साथ इन दुर्लभ प्रजातियों की खोज में लगे रहे हैं।

- संकेत राउत

दक्षिणी आन्ध्र प्रदेश में सिद्दवट्टम नाम का एक गाँव है। यह कडप्पा ज़िले (अब नया नाम वाय.एस.आर. ज़िला) में पेन्नार नदी के किनारे बसा हुआ है। चौड़ी रेतीली नदी की तलहटी पर एक खराब रखरखाव वाली, नीची सड़क आपको नदी के उस पार ले जाती है। नदी पार करते हुए, इससे पहले कि आप कुछ समझ पाएँ, आप सिद्दवट्टम से आगे निकल जाते हैं! इस इलाके में पूर्वी घाट के जंगल और पहाड़ियाँ हैं, जो भारत के प्राकृतिक इतिहास से जुड़े कई रहस्यों को अपने में समेटे हुए हैं।

चित्र-1: कोडंडारामास्वामी मन्दिर

सिद्दवट्टम के पास एक और ऐसा ही गाँव है जिसका नाम है वोंटिमिट्टा। यह जगह प्रसिद्ध कोडंडारामास्वामी मन्दिर के लिए जानी जाती है। मुम्बई से चेन्नई जाने वाली ट्रेन में बैठे यात्रियों को कडप्पा शहर पार करने के बाद इस प्रसिद्ध मन्दिर के गोपुरम दिखाई देने लगते हैं।

जेरडॉन कोर्सर - एक दुर्लभ पक्षी

यह बात जनवरी 1986 की है जब मैं वोंटिमिट्टा के वन विश्राम गृह में रुका था। मैं उस सर्वेक्षण दल का सदस्य था जो 'जेरडॉन कोर्सर या डबल बैंडेड कोर्सर' नामक पक्षी की तलाश में था। यह एक दुर्लभ और स्थानिक पक्षी है (स्थानिक का अर्थ है, वह प्राणी सिर्फ एक निश्चित जगह पर ही पाया जाता है। इस जगह के अलावा और कहीं नहीं)। यद्यपि मैं इस खोज में जून 1985 से जुड़ा था, वैसे इस पक्षी को ढूँढने के प्रयास सन् 1848 से ही शुरू हो गए थे जब इसे पहली बार देखा गया था।

थॉमस क्लेवरहिल जेरडॉन (जो पेशे से डॉक्टर थे) सर्जन मेजर के रूप में मद्रास (अब चेन्नई) स्थित ब्रिटिश भारत के मेडिकल दल में तैनात थे। जेरडॉन ने सन् 1848 में

पहली बार इस पक्षी की खोज की थी। उन्होंने इस पक्षी को अपने प्राकृतिक इतिहास संग्रह में शामिल किया था। और इस अजीब एवं नए पक्षी की खाल को एक पक्षी वैज्ञानिक, डब्ल्यू. ब्लिथ के पास भेजा। डब्ल्यू. ब्लिथ ने इसे एक नई प्रजाति के रूप में पहचाना और इसे डबल-बैंडेड कोर्सर (double-banded courser) नाम दिया। सर्जन मेजर की वजह से इसे Jerdon's courser के नाम से भी जाना जाता है।

बहरहाल, अब मैं अपनी कहानी पर वापस लौटता हूँ। उस रात, वोंटिमिट्टा के वन अधिकारी ने मुझे बताया कि मेरे बर्ड ट्रैकर, ऐतन्ना ने उसके गाँव रेड्डीपल्ली में 'कालिवि कोडी' नाम के एक पक्षी को पकड़ा है। रेड्डीपल्ली सिद्दवट्टम के उत्तर में स्थित है। मैं यह जानता था कि स्थानीय गाँव वाले एवं पक्षी पकड़ने वाले, कई प्रकार के पक्षियों को 'कालिवि कोडी' के नाम से जानते हैं। 'कालिवि' स्थानीय भाषा में कैरिसा

कुछ खोजबीन अभी भी बाकी है

डबल-बैंडेड कोर्सर के रहस्यमय तरीके से गायब होने और फिर से प्रकट होने की तरह ही, भारतीय जंगलों में कई अन्य रहस्य शायद अभी भी मौजूद हैं। इनमें से एक है, गुलाबी सिर वाली बत्तख। किसी समय ये पक्षी पूर्वोत्तर के ऊँचे पहाड़ों के दूर-दराज़ के तालाबों में घोंसले बनाने के लिए जाने जाते थे। और कभी-कभी आन्ध्र प्रदेश के पूर्वी तट तक प्रवास कर पहुँच जाते थे! लेकिन आज इन बत्तखों का नामोनिशान तक नहीं है।

लेकिन वे अभी भी कहीं तो मौजूद हो ही सकती हैं। आपको केवल उन्हें पूर्वी हिमालय से लेकर उत्तरी म्यांमार और शायद वियतनाम तक खोजना होगा। और शायद आप उन्हें तब तक नहीं ढूँढ पाएँगे जब तक कि आप ऊँची चोटियों पर न चढ़ जाएँ, दूर-दराज़ के जंगलों के तालाब का दौरा न कर आएँ, जब तक सबसे अच्छे आदिवासी वन्यजीव विशेषज्ञ से न मिल लें या लगातार कई दिनों तक दो डिग्री सेंटीग्रेड वाली सर्द बरसाती रातें न बिता लें। शायद इस गुत्थी का जवाब छुपा है, गर्म हवा के गुब्बारे में बैठ इन क्षेत्रों में धीरे-धीरे यात्रा कर, जंगल के सबसे ऊँचे तालाबों पर रुककर इन पक्षियों को ढूँढने में। तब यह एक कमाल की यात्रा होगी।

ऐसी ही न जाने कितनी गुत्थियाँ सुलझ जाने को बेताब हैं - मलय सन बीयर, पिग्मी रायनो (बौना गैंडा), कान्हा नेशनल पार्क का बारहसिंगा, हिमालय की बटेर (जिसे आखिरी बार 1877 में देखा गया था)...! क्या कोई इन्हें सुलझाने के लिए तैयार है?

की झाड़ियों को कहते हैं और 'कोडी' किसी भी प्रकार के मुर्गे को सन्दर्भित करता है। मैं हैरत में था कि क्या वाकई में ऐतन्ना ने उस पक्षी को खोज निकाला है जिसकी मुझे तलाश है!

यह खोज मुझे पूर्वी घाट के कई अन्य इलाकों में ले गई। यह भागदौड़ और उससे सम्बन्धित समस्त यात्राएँ मैंने अपनी भरोसेमन्द मोटर-साइकिल (जिसे मैं एक पुराना वफादार साथी मानता था) पर अपने कैंपिंग उपकरणों के साथ तय की थी। सामान्य मौसम वाले दिन मैं ऐतन्ना को ढूँढने के लिए तुरन्त निकल पड़ता लेकिन उस रात काफी मूसलाधार बारिश हो रही थी। मैं जानता था कि पेन्नर नदी का पानी सिद्दवट्टम की उस नीची सड़क के ऊपर से बह रहा होगा और ऐसी स्थिति में नदी को पार करना असम्भव होगा।

एक पक्षी की तलाश में

इतनी तेज़ बारिश में पक्षी को उस रात न देख पाने को लेकर मन में निराशा के भाव थे लेकिन मैं फिर भी उम्मीद करता रहा कि आज के दिन हमें शायद विज्ञान के लिए कुछ तो नया देखने को मिल जाएगा।

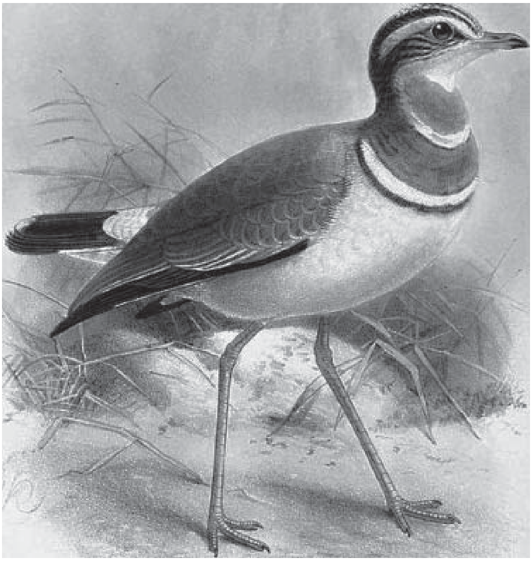

***चित्र-2:** जॉन जेरार्ड क्यूलेमैन्स द्वारा बनाया गया डबल-बैंडेड कोर्सर का चित्र।*

रात में करीब तीन बजे बारिश का प्रकोप कुछ कम हुआ और मैं चार बजे अपनी मोटरसाइकिल उठाकर निकल पड़ा। बारिश अभी भी जारी थी और सड़क पर अँधेरा था। आम तौर पर रात के समय भी, कडप्पा-चेन्नई मार्ग पर, बड़े वाहनों की काफी आवाजाही रहती है। लेकिन शुक्र है बारिश का, जिसके कारण सड़क खाली-खाली ही थी।

मैंने सड़क के किनारे का एक जंक्शन भाकरपेटा (जो एक रेलवे

स्टेशन भी है) पार किया और उत्तर दिशा में सिद्दवट्टम की ओर मुड़ गया। नदी के पानी का बहाव तेज़ था और वह उस निचली सड़क के ऊपर से अभी भी बह रही थी। इसलिए मैं भाकरपेटा की तरफ वापस मुड़ गया और मैंने रेलवे स्टेशन पर ही अपना डेरा डाल लिया। मेरी मोटरसाइकिल स्टेशन के बाहर की रेतीली सड़क पर धँस रही थी इसलिए रेलवे प्लेटफॉर्म ही एकमात्र आश्रयस्थल था जो मुझे और मेरे वाहन को बारिश से बचा सकता था। इस तरह मैं बरसात की काली रात में अपनी मोटरसाइकिल के साथ एक छोटे-से प्लेटफॉर्म पर बिलकुल अकेला डटा हुआ था - एक पक्षी की तलाश में!!

एक घण्टे बाद मैंने एक बार फिर नदी का रुख किया। वहाँ पहुँचने पर देखा कि पानी के बहाव के नीचे सड़क हल्की-हल्की नज़र आ रही थी, इसलिए मैंने नदी पार करने का साहस किया। ऐतन्ना एक स्थानीय आदिवासी समुदाय से था जिसे कई प्रकार के जालों के साथ छोटे पक्षियों और प्राणियों को पकड़ने में महारत हासिल थी। वह बेसब्री से इन्तज़ार कर रहा था और मुझे सीधे अपने घर ले गया, उस पक्षी को दिखाने जिसे वह 'कलिवि कोडी' होने का दावा कर रहा था। वह पक्षी जिसकी तलाश में मैं जुटा हुआ था।

मैंने जैसे ही उसे देखा, मेरा दिल खुशी से भर गया। वह वाकई में 'जेरडॉन कोर्सर' या डबल-बैंडेड कोर्सर ही था। वही पंछी जिसे 1848 के बाद से नहीं देखा गया था। मैं उसे उसके माथे पर बने सफेद रंग के विशिष्ट *नामम* चिह्न और उसकी छाती पर काले रंग के दोहरे मालानुमा पैटर्न से घिरे गले के लाल धब्बे से पहचान सकता था।

वह ऐतन्ना के हाथ पर बड़े आराम-से बैठी हुई, मुझे अपनी मोतियों जैसी आँखों से टुकुर-टुकुर निहार रही थी। मैं बारिश से भीगी उस कुटिया में खड़ा था, बिलकुल हक्का-बक्का, कुछ न बोल पाने की हालत में। इतने में ऐतन्ना मेरे कान में धीरे-से बोला, "अन्ना, क्या यह वही चिड़िया है? क्या यह आपकी 'कलिवि कोडी' है?" मैंने सिर हिलाकर मूक सहमति दर्शायी।

वन्यजीव अभ्यारण्य की घोषणा

मैं तुरन्त ही सिद्दवट्टम की तरफ यह सोचते हुए भागा कि अब बहुत काम करना है। मैंने बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसाइटी (बी.एन.एच.एस.) और आन्ध्र प्रदेश वन विभाग को फोन लगाया, दोबारा की गई इस अविश्वसनीय खोज के बारे में बताने के लिए। बस फिर क्या था! यह खबर आग की तरह फैल गई। अगले दिन दोपहर मुझे बताया गया कि डॉ. सलीम अली, मशहूर भारतीय पक्षी वैज्ञानिक खुद आ रहे हैं, उस चिड़िया को देखने!

आन्ध्र प्रदेश वन विभाग ने इस

चित्र-3: डॉ. सलीम अली, भारत भूषण और ऐतन्ना के साथ साइट पर।

खोज की अहमियत को पहचाना और तुरन्त ही वहाँ के जंगलों को एक वन्यजीव अभ्यारण्य (वाइल्ड लाइफ सेंचुरी) घोषित कर दिया। चूँकि डबल-बैंडेड कोर्सर का पर्यावास, लंकमलाई पहाड़ी की झाड़ियों में था, उस संरक्षित क्षेत्र को लंकामल्लेश्वर वन्यजीव अभ्यारण्य नाम दिया गया।

यही नहीं, आन्ध्र प्रदेश की सरकार ने अँग्रेज़ी और तेलुगू अखबारों में इस दोबारा की गई खोज के बारे में पूरे-पूरे पेज के विज्ञापन छपवाए थे।

कई सरकारी अधिकारियों ने सोचा कि एक पक्षी, जिसे सन् 1848 के बाद सिर्फ एक बार देखा गया है, के कारण लगभग 500 वर्ग किलोमीटर के बहुत अच्छे जंगलों को नो-डिस्टर्बेंस ज़ोन और वन्यजीव अभयारण्य के रूप में चिह्नित करना मूर्खतापूर्ण था। क्या हम पागल थे? मेरे और ऐतन्ना के अलावा किसी ने उस चिड़िया को नहीं देखा था, न जंगल में और न ही उसके पर्यावास में। चिड़िया की कोई तस्वीर भी मौजूद नहीं थी। लंकामलाई पहाड़ियों में मौजूद अन्य वन्यजीवों के बारे में भी कोई लिखित रिपोर्ट, वैज्ञानिक दस्तावेज़ या विस्तृत सूची मौजूद नहीं थे।

दुखः की बात यह थी कि जिस डबल-बैंडेड कोर्सर को मैंने देखा, वह दो दिन कैद में रहने के बाद मर गई, शायद भारी बारिश के कारण। इस घटना ने हम सभी को दुखी कर दिया। हालाँकि, खुशी की बात यह है कि 1986 के बाद से डबल-बैंडेड कोर्सर को कई बार जंगलों में देखा गया है और इस पक्षी की कई सारी तस्वीरें भी ली गई हैं।

वर्तमान समय में किसी चिड़िया

जेरडॉन कोर्सर के अण्डे की खोज

सन् 1986 में दोबारा की गई जेरडॉन कोर्सर की खोज जितनी रोमांचक है, उतनी रोमांचक कहानी जेरडॉन कोर्सर के अण्डे की खोज की भी है। जेरडॉन कोर्सर का अण्डा स्कॉटलैंड के एबरडीन विश्वविद्यालय के प्राणि संग्रहालय में सुरक्षित रखा है। इस विद्यालय के म्यूज़ियम के प्रमुख डॉ. एलन नॉक्स बताते हैं कि एक दिन उन्हें एक दराज़ में कुछ अण्डे मिले जिन्हें सूचीबद्ध नहीं किया गया था। इनमें से कुछ अण्डे सन् 1900 में संग्रहित किए गए थे। इनमें से एक अण्डे पर लगा लेबल पढ़ा तो यकीन ही नहीं हो रहा था कि यह एक यूरेका क्षण है! कुछ ऐसा खोजना जो दुर्लभ और रोमांचक था। उस लेबल के मुताबिक यह अण्डा दुर्लभ जेरडॉन कोर्सर का था।

अब अगला सवाल था, इसको साबित कैसे किया जाए कि यह अण्डा इस दुर्लभ और अल्पज्ञात पक्षी का ही है। डॉ. नॉक्स इस अण्डे को हर्टशायर स्थित ट्रिंग प्राकृतिक संग्रहालय में मौजूद अण्डा संग्रह में लेकर गए। वहाँ इस अण्डे का मिलान जब अन्य कोर्सर प्रजातियों के साथ करके देखा गया, तो समझ आया कि यह अन्य कोर्सर प्रजातियों से मेल नहीं खाता। यानी सम्भव है कि यह जेरडॉन कोर्सर हो सकता है। लेकिन अभी इसका भी सत्यापन होना बाकी था। अब इस अण्डे के भीतरी हिस्से से झिल्ली का एक छोटा टुकड़ा लेकर उसका डीएनए प्रोफाइलिंग किया गया। इसके बाद ट्रिंग के संग्रहालय में सुरक्षित रखे गए जेरडॉन कोर्सर के पंजे की खाल के नमूने के साथ इसका मिलान किया गया। डीएनए मैचिंग से यह साबित हो गया कि एबरडीन विश्वविद्यालय में मिला अण्डा जेरडॉन कोर्सर का ही है, जिसका सम्बन्ध दक्षिण भारतीय राज्य से है।

यह अण्डा भारत से एबरडीन विश्वविद्यालय तक कैसे पहुँचा, इसका भी एक

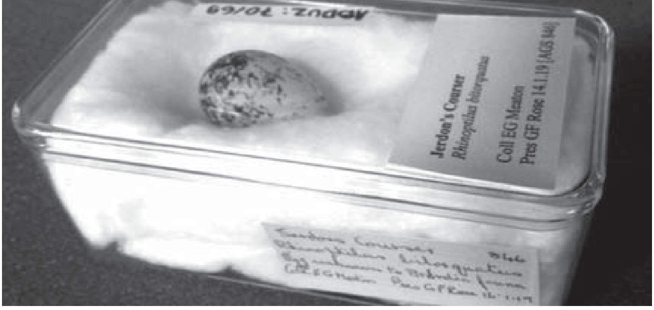

चित्र-4: एबरडीन विश्वविद्यालय में संरक्षित भारत के एक लुप्तप्राय पक्षी जेरडॉन कोर्सर का दुर्लभ अण्डा।

रोचक किस्सा है। यह अण्डा अर्नेस्ट मीटन द्वारा एकत्रित संग्रह का हिस्सा था। मीटन पशु चिकित्सक थे और सम्भवतः 1917 के आसपास कोलार गोल्ड फील्ड में काम करते थे। सन् 1919 में मीटन के इस संग्रह को कलकत्ता की जूटमिल में बतौर इंजीनियर काम कर रहे जॉर्ज रोज़ ने खरीद लिया। बाद में, जॉर्ज ने एबरडीन लौटकर एबरडीन ग्रामर स्कूल को यह संग्रह दान दे दिया। 1970 के दशक में ग्रामर स्कूल ने यह संग्रह एबरडीन यूनिवर्सिटी को सौंप दिया जहाँ अगले तीस साल तक यह संग्रह दराज़ में जस-का-तस सुरक्षित रखा रहा। जब इत्तेफाक से डॉ. नॉक्स ने दराज़ को खोला तब कहीं जाकर सन् 2013 में दुनिया जेरडॉन कोर्सर के अण्डे से रूबरू हो सकी।

– विविध स्रोतों से संकलित

को पकड़ना और उसका प्रदर्शन करना गैर-कानूनी है। वन्य जीवन संरक्षण अधिनियम 1972 की अनुसूची-1 के अनुसार जीव का शिकार करना अथवा कैद में रखना कानूनन जुर्म है।

डबल-बैंडेड कोर्सर की पुनः खोज के बाद हमें यह ज्ञात हुआ कि पूर्वी घाट के जंगलों में ऐसी कई स्थानिक प्रजातियाँ पाई जाती हैं। उनमें शामिल हैं - पीले गले वाली बुलबुल जो एक सुन्दर और रहस्यमय पक्षी है, सुनहरी रंग की गेक्को (छिपकली) जो अपना रंग सुनहरे से हल्के भूरे और जैतूनी भूरे रंग में बदल सकती है, और लगभग बौना ताड़ का पेड़, *साइकस बेड़डोमी।*

और आज जब मैं उस रोमांचक दिन के बारे में, ऐतन्ना और मेरी पुरानी वफादार मोटरसाइकिल के बारे में सोचता हूँ तो मैं यह सोचने की हिम्मत भी कर लेता हूँ कि शायद किसी दिन वह गुलाबी सिर वाली बत्तख, जिसे अब विलुप्त माना जाता है, को भी एक दिन..............?!!!

भारत भूषण: जीवविज्ञानी, बर्डवॉचर, शिक्षक और प्रशिक्षक हैं। वे भारतीय उप-महाद्वीप के प्राचीन ज्ञान तंत्रों व विज्ञानों के बहुत उत्साही शिक्षार्थी रहे हैं। पुणे में रहते और काम करते हैं।

अँग्रेज़ी से अनुवाद: निधि सोलंकी: दस वर्षों से शिक्षा के क्षेत्र में काम कर रही हैं, मुख्य रूप से वैकल्पिक शिक्षा में, जिसमें पूछताछ-आधारित शिक्षा पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है। 'आनंद निकेतन स्कूल, भोपाल', 'अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन', 'एकलव्य फाउंडेशन', 'राजघाट बेसेंट स्कूल (कृष्णमूर्ति स्कूल)' और 'प्रकृति स्कूल, नोएडा' जैसी जगहों पर काम करने का अनुभव है। पक्षी देखना, प्रकृति में रहना और बच्चों के साथ काम करना पसन्द है।

सौजन्य से: कल्पवृक्ष और राष्ट्रीय जैव विविधता और रणनीतिक कार्य योजना।

यह लेख *चंदामामा* (अँग्रेज़ी) के अंक मार्च 2003 से साभार।